नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव पर राष्ट्रीय मीडिया संगोष्ठी

संस्कृति, सभ्यता, मूल्य और मीडिया पर वक्ताओं ने रखे विचार

वर्धा दि.19 जनवरी 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग की ओर से 'आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय मीडिया संगोष्ठी के प्रथम दिन संस्कृति, सभ्यता, मूल्य और मीडिया विषय पर आयोजित सत्र में डॉ. अशोक

मिश्र, जयंत तोमर, मसूद आलम ने विचार रखे। सत्र की अध्यक्षता भिमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के पत्रकारिता विभाग के डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा ने की। मसूद आलम ने कहा कि पैसे के कारण हम अपनी सभ्यता से अलग होते जा रहे हैं। भारतीय सभ्यता अश्लीलता नहीं सीखाती। आज भी हमारी सभ्यता संपन्न है, लेकिन मीडिया उससे दूर होता जा रहा है। मीडिया में नकारात्मक और विवादस्पद खबरें ही अधिक दिखती है न कि विकासात्मक खबरें। उन्होंने अखबार पढ़ने के तरीके पर सवाल उठाते हुए कहा कि हम रोजाना अखबार पढ़ते हैं लेकिन हमें ही नहीं पता कि हमें पढ़ना क्या है? हम भारत और पाकिस्तान के मैच के दिन छुट्टी ले लेते हैं क्यों? तकनीक और विज्ञान के बारे में हमारे अखबारों में काफी कम होता है। हम इस बात से परिचित नहीं है कि हम अब भी अमेरिका से इस मामले में 20 साल पीछे हैं। जिन खबरों में मीडिया में प्रमुखता से छापनी चाहिए वह एक तरह से नदारद है। मीडिया ऐसी खबरें दे रहा है जिससे समाज में डर पैदा हो रहा है। अगर मीडिया समाज में सकारात्मक खबरें दे तो सामाजिक परिवर्तन जरूर आएगा। उन्होंने अपने वक्तव्य का अंत में कहा कि मनुष्य अपने सर्वनाश का कारण खुद है। इसलिए जो तकनीक बनी है उसका इस्तेमाल हमें सीखना होगा। दूसरे वक्ता के तौर पर जयंत तोमर ने अदम गोंडवी के पंक्तियों के साथ अपने बात को शुरू की। उन्होंने कहा कि सौ में सत्तर आदमी जब तलक नाशाद है, दिल पर रखकर हाथ कहिए देश क्या आजाद है। उन्होंने कहा कि जब 70 फीसदी संसाधन मुठ्ठी भर लोगों के हाथों में है तो आजादी के इतने वर्षों के बाद भी हमने क्या पाया। पूरी दुनिया में विकास की दृष्टि से हम 127वें स्थान पर हैं तो हमने विकास किया ही कहां? उन्होंने समाज के चार पहलुओं की ओर सबका ध्यान खींचते हुए कहा कि पूरी दुनिया में चार ताकते हैं- सरकार, बाजार, मीडिया और जनता। सभी कहते हैं कि सरकार जनता

के लिए होती है। उसकी अवधारणा ही जनता के कारण ही आई है। लेकिन सरकार ने बाजार के सामने घुटने टेक दिए हैं। मीडिया ने भी बाजार के सामने दम तोड़ दिया है और दोनों बाजार की गोद में बैठ गए हैं। ऐसी स्थिति में जनता खुद को असहाय महसूस कर रही है। उन्होंने पी सांईनाथ के शब्दों को दोहराते हुए कहा कि मीडिया 5 प्रतिशत सम्पन्न घरानों के लिए लगी हुई है तो मुझे अंतिम छोर पर खड़े 5 प्रतिशत लोगों की याद आती है जो कड़ी मेहनत करके दो वक्त की रोटी कमाते हैं। उनके लिए मीडिया कहां है। जब उन 5 प्रतिशत लोगों की बात मीडिया करेगा तभी असली सामाजिक बदलाव संभव है।

तीसरे वक्ता के रूप में अशोक मिश्र ने पत्रकार को चिराग की संज्ञा देते हुए कहा कि उसे ऐसा चिराग होना चाहिए कि वह जहां भी रहे अपने रौशनी से समाज को रौशन करता रहे। उन्होंने शुरुआत पत्रकारिता की बात करते हुए कहा कि शुरुआत में पत्रकारिता मिशन थी लेकिन उद्देश्य के साथ ही उसका स्वभाव भी बदलता गया। पहले उसका कार्य समाज सेवा करना था। जब वह व्यवसाय हो गया तो उसकी विसंगतियां भी मीडिया में आ गई। आज जो विसंगतियां दिखाई दे रही है वही विसंगतियां हैं। आज बाजार के दबाव के कारण अखबार के कंटेट से ज्यादा उसका सर्कुलेशन ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। वैश्विकरण के कारण मीडिया में जो बदलाव आया है। उसने अखबार को उत्पाद बना दिया है। तो उसे बेचना कैसे हैं? यह बात ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। आज अखबार का पाठक वर्ग बढ़ गया है लेकिन अखबार पढ़ने का समय कम हो गया है। उन्होंने पत्रकारों के मूल्यों में आ गिरावट का जिक्र करते हुए कहा कि इस कारण पत्रकारिता भी गिरती जा रही है। जो विज्ञान दे रहा है उसकी खबर महत्वपूर्ण हो गई है। उसका कंटेट महत्वपूर्ण हो गया है। इन सबसे बचने के लिए संस्थानों को चाहिए कि वह अच्छे नैतिक आचरणवाले पत्रकार पैदा करें।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में गिरिजा शंकर शर्मा ने आध्यात्मिकता तो भगवान शंकर के परिवार से जोड़ते हुए कहा कि उस परिवार में बैल सिंह का विरोधी है, सांप चुहा का विरोधी है, सांप मोर का विरोधी है बावजूद इसके वे सामंजस्य के साथ रहते हैं। इसी तरह समाज में भी स्नेह होना चाहिए। उन्होंने मीडिया की प्रकृति की चर्चा करते हुए कहा कि मीडिया कहता है कि आप लड़ेंगे नहीं तो हमारा काम कैसे चलेगा और कुछ बोलोंगे नहीं तो हम छापेंगे क्या? पठानकोट की खबर पहले पृष्ठ पर नहीं आ सकी क्योंकि उस दिन कई अखबारों के पहले पृष्ठ पर पूरा विज्ञापन था। क्या मीडिया उस दिन विज्ञापन को मना नहीं कर सकता था। यह देश सहिष्णुता का देश है। इसमें अद्भुत शक्ति है। जो हमें सामाजिक बदलाव की ओर प्रेरित करता है।

मंच संचालन जनसंचार विभाग के सहायक प्रो. राजेश लेहकपुरे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रो. संदीप कुमार वर्मा ने किया।